STATE IN MODERN INDIA

भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना

काल कोठरी की घटना से आप क्या समझते है ?

जून, 1756 में नवाब सिराजुद्दौला द्वारा कलकत्ता पर अधिकार कर लेने के बाद 20 जून 1756 की रात को कलकत्ता के विलियम फोर्ट में स्थित एक कमरे (18 x 14 feet) में 146 युद्ध बन्दियों को बन्द कर दिया, जिनमें से प्रातः काल तक दम घुटने के कारण 123 अंग्रेज युद्ध बन्दियों की मृत्यु हो गई। इसी घटना के अधिकांश भारतीय इतिहासकारों द्वारा सही नहीं माना जाता है। क्योंकि बंगाल कलकत्ता प्रेसिडेंसी कोर्ट ऑफ डायरेक्ट्रस के साथ उस दौरान जो भी पत्र व्यवहार हुआ उसमे इस घटना का कोई उल्लेख नहीं मिलता और इसके साथ ही अलीनगर की संधि (फरवरी 1757) में अंग्रेजों द्वारा इन मृतक युद्ध बन्दियों का कोई उल्लेख नहीं किया गया।

और संभवतः यह मनगढ़त कहानी हालवेल के द्वारा तैयार की गई और इसका मुख्य उद्देश्य सिराजुद्दौल से बदला लेने के लिये मद्रास प्रेसिडेंसी के अंग्रेजों की भावनाओं को उत्तेजित करना था।

प्लासी का युद्ध

जून 1757 में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला तथा क्लाइव के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना के बीच प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें नवाब की पराजय हुई। 28 जून, 1757 को अंग्रेजों ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब नियुक्त कर दिया।

युद्ध के प्रमुख कारणों में दोनों ही पक्षों की ओर से अलीनगर की संधि की शर्तों की पालना नहीं करना अंग्रेजों ने नवाब पर अनेक दोष लगाये और नवाब के

Dr. Kailash Chand Gurjar

विरुद्ध षड्यन्त्र किए तथा क्लाइव बंगाल में अपना प्रभाव स्थापित करने को आमदा था।

नवाब की सेना में 50000 सैनिक थे जबकि क्लाइव की सेना में 800 यूरोपीय तथा 2200 भारतीय सैनिक थे। नवाब के कुछ सेनानायक क्लाइव से मिले हुए थे। मीर मुइनुद्दीन ने ही नवाब की तरफ से अंग्रेजी सेना का सामना किया था। अर्थात् बिना किसी विशेष सैनिक प्रयास के क्लाइव युद्ध जीतता है।

प्लासी का युद्ध जो भारत के अत्यंत निर्णायक युद्धों में एक माना जाता है। के मुख्य परिणाम अग्रांकित है –

1. इस युद्ध के बाद ब्रिटिश कंपनी का बंगाल, बिहार, उड़ीसा पर अप्रत्यक्ष रूप से पूर्ण राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित हो गया क्योंकि इस युद्ध के बाद मीर जाफर को कंपनी द्वारा बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया वह पूर्ण रूप से अपने अस्तित्व के लिये कंपनी पर निर्भर हो गया और वह कंपनी की मदद से बंगाल का नवाव नियुक्त हुआ।

2. इस युद्ध के बाद मीर जाफर द्वारा कंपनी को 24 परगने जागीर में दिये गये और लगभग 2½ करोड़ रूपये की राशी नगद दी गई उससे कंपनी की आर्थिक स्थिति अत्यंत मजबूत हो गई।

3. यद्यपि जी. बी. मालसेन जैसे कुछ अंग्रेज इतिहासकरों ने प्लासी के युद्ध को सैनिक दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण युद्ध माना किंतु उनका यह मत उचित नहीं है क्योंकि यह युद्ध कंपनी द्वारा अपनी ताकत के बजाय कूटनीति व षड़यंत्र के द्वारा जीता था।

Dr. Kailash Chand Gurjar

औरगंजेब की मृत्यु के बाद जब मुगल साम्राज्य का विघटन प्रारंभ हो गया तो उसके फलस्वरूप भारत में मुख्यतः तीन स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गये।

(1) **बंगाल :–** बंगाल के स्वतंत्र राज्य की स्थापना 1717 A.D. में मुगल सम्राट फर्रूखसीयर के समय में मुर्शीद कुलीखां के द्वारा की गई।

(2) **अवंध :–** अवध के स्वतंत्र राज्य की स्थापना 1722 A.D. में मुगल सम्राट मुहम्मद शाह के समय में सआदत खां बुरहानमुल्क द्वारा की गई।

(3) **हैदराबाद :–** हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना 1724 AD में मुगल सम्राट मुहम्मद शाह के समय में निजाम उल मुल्क आसफ जहाँके द्वारा की गई। इसका मूलनाम चिनकिलिज खाँ था और उसे निजाम उल मुल्क आसफ जहाँ की उपाधि मुगल सम्राट मुहम्मद शाह ने दी थी ।

बंगाल के नवाब

(1) **मुर्शीद कुली खां :–** जो बंगाल के स्वतंत्र राज्य का संस्थापक था। मुर्शीद कुली खां 1717 से 1727 तक बंगाल के नवाब के पद पर रहा। इनके द्वारा भूराजस्व व्यवस्था की जो पद्धति लागू की गई उसके अन्तर्गत उसने भूमिकर वसूली का कार्य जमींदारों को ठेके पर दिये जाने की व्यवस्था को लागू किया।

(2) **शुजाउद्दीन मुहम्मद खां :–** मुर्शीद कुली खां के बाद उसका दामाद सुजाउद्दीन मुहम्मद खां बंगाल का नवाब नियुक्त हुआ। वह 1727 से 1739 तक रहा।

(3) **सरफराजखां (1739–40) :–** सुजाउद्दीन मुहम्मद खां के बाद उसका पुत्र सरफराज खां (1739–40) तक बंगाल का नवाब रहा।

(4) **अलीवर्दी खां (1740–56) :–** अलीवर्दी खां सरफराज खां के समय में बिहार प्रांत का नायब सुबेदार था किंतु 1740 में सरफराज खां को हटाकर

अलीवर्दी खां स्वयं बंगाल का नवाब बन गया और 1740–56 तक वह नवाब के पद पर रहा।

(5) (सिराजुद्दौला 1756–57) :– अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद 1756 AD में सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना वह अलीवर्दी खां की पुत्री का पुत्र (दोहिता) था और इसके समय में प्लासी का युद्ध हुआ।

जब तृतीय कर्नाटक युद्ध आरंभ होने की संभावना को देखते हुये नवाब सिराजुद्दौला के आदेश पर अग्रेजों द्वारा कलकत्ता में स्थित अपने विलियम फोर्ट की किलेबन्दी किये जाने के कार्य को बंद नहीं किया तो तब जून 1756 AD में सिराजुद्दौला द्वारा कलकत्ता पर आक्रमण करके और अंग्रेजों को वहाँ से निष्कासित करके उस पर अपना कब्जा कर लिया।

इस समय बंगाल (कलकत्ता) प्रेसिडेंसी का गवर्नर ड्रेक (William RogerDrake) था।

- बंगाल की राजधानी मुर्शीद कुली खां ने ढ़ाका से मुर्शिदाबद स्थानांतरित कर दिया था।
- नवाब सिराजुद्दौला द्वारा कलकत्ता पर अधिकार कर लेने के बाद कलकत्ता के विलियम फोर्ट में स्थित एक कमरे में 146 अंग्रेज युद्ध बन्दियों को 20 जून 1756 की रात को कैद कर लिया जिसे काल कोठरी की घटना के नाम से जाना जाता है।

उन 146 युद्ध बन्दियों में मेरी कैरी नामक महिला भी थी। और जो 23 जीवित युद्ध बन्दियों के साथ मैरी कैरी के साथ हालवैल भी था। जिसके (हालवैल) बारे में माना जाता है कि उसी ने इस काल कोठरी की घटना की मनगढ़त कहानी तैयार की थी।

मद्रास प्रेसिडेंसी ने कलकत्ता पर पुनः अधिकार करने के लिये दो अग्रेजी सेना (A) एक रोबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में थल सेना और (B) दूसरी वाटसन के नेतृत्व में एक जल सेना भेजी। और इन दानों के नेतृत्व में

ब्रिटिश सेना जनवरी 1757 AD में सिराजुद्दौला से कलकत्ता को वापस छीन लिया। अग्रेंजों द्वारा अपनी पहली टकसाल 1757 AD में कलकत्ता में स्थापित की गई।

(6) **मीर जाफर (1757–60)–** प्लासी युद्ध के बाद कंपनी द्वारा मीर जाफर को बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया और वह 1757–60 तक बंगाल का नवाब रहा।

(7) **मीर कासिम (1760–63) :–** 1760 AD में कंपनी और मीर जाफर के बीच सम्बन्ध खराब हो जाने के फलस्वरूप कंपनी द्वारा मीर जाफर को हटाकर उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया और उसके बदल में मीर कासिम द्वारा कंपनी को बर्दमान, मिदनापुर और चटगाँव में तीन जिसे जागीर में दिये गये किंतु जब मीर कासिम ने धीरे–धीरे अपनी सैनिक शक्ति का गठन करना शुरू किया और अंग्रेजों के हस्तक्षेप से बचने के लिये अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुँगेर बिहार) हस्तातंरित कर ली तब कंपनी और मीर कासिम के बीच सम्बन्ध खराब हो गये किंतु अन्ततः कंपनी और मीरकासिम के बीच झगड़े का मुख्य कारण अग्रेजों द्वारा दस्तक का दुरूपयोग करना और मीर कासिम द्वारा भारतीय व्यापारियों को भी बंगाल में बिना कोई व्यापारिक शुल्क दिये व्यापार करने की छूट प्रदान कर दी।

(8) **मीरजाफर (1763–65) (दूसरी बार)–** 1763AD में मीरकासिम को हटाकर कंपनी द्वारा मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब बना दिया और वह 1765 तक इस पद पर रहा।

और मीर जाफर ने राजधानी मुंगेर से मुर्शिदाबाद वापस ले आया।

(9) **निजामुद्दौल (1765–66 तक)**

(10) **शैफ–उद–दौला (1766–70 तक)**

(11) **मुबारक–उद्–दौला (1770–75 तक)**

बक्सर का युद्ध

- जब कंपनी द्वारा मीरकासिम को 1763 A.D. में नवाब के पद से हटा दिया तो तब उसने नवाब का पद पुनः प्राप्त करने के लिये अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सैनिक मदद प्राप्त करने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप ही शुजाउद्दौला मुगल सम्राट शाहआलम II और मीरकासिम की संयुक्त सेना और मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में अग्रेंजी सेना के बीच 22 अक्टू. 1764 AD को बक्सर का युद्ध हुआ जिसमें इन तीनों की संयुक्त सेना को अग्रेजों द्वारा पराजित कर दिया गया।
- इस युद्ध में अग्रेजों की सैनिक संख्या 8000 थी वही इन तीनों की संयुक्त सेना 45,000–50,000 के बीच मानी जाती थी।
- बक्सर के युद्ध के समय बंगाल या कलकत्ता प्रेसीडेंन्सी का गवर्नर बेन्सिटार्ट था।

बक्सर युद्ध जो भारत के अत्यंत महत्वपूर्ण युद्धों में से एक माना जाता हैं के मुख्य परिणाम अग्रलिखित है –

1. इस युद्ध के बाद ब्रिटिश कंपनी का राजनैतिक प्रभुत्व बंगाल से बढ़कर अवध पर भी स्थापित हो गया।
2. इस युद्ध में विजय प्राप्त कर लेने के बाद कंपनी की प्रसिद्धि संपूर्ण भारत में फैल गई और अब कंपनी की गिनती भारती की एक प्रमुख राजनैतिक और सैनिक शक्ति के रूप में की जाने लगी।
3. इस युद्ध ने भारतीय सैन्य व्यवस्था पर यूरोपीय सैन्य–व्यवस्था की श्रैष्ठता को स्थापित कर दिया गया और अब भारतीय शासकों ने भी अपनी सेनाओं का यूरोपीय पद्धति पर पुर्नगठन करना प्रारंभ कर दिया।

Dr. Kailash Chand Gurjar

- बक्सर युद्ध के बाद Court of directions के द्वारा रोबर्ट क्लाइव को एक बार पुनः 1765–67 के दौरान बंगाल (कलकत्ता) प्रेसीडेन्सी का पुनः गवर्नर नियुक्त किया गया।

- बक्सर युद्ध के बाद 1765 में रोबर्ट क्लाइव इलाहबाद और मुगल सम्राट शाहआलम II के बीच इलाहबाद की संधि हुई जिसके द्वारा मुगल सम्राट ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार कंपनी को प्रदान कर दिये और साथ ही उत्तरी सरकार के चार जिले (राजामुंदी, शिकाकोल, उलोर मुस्तफानगर) कंपनी को प्रदान कर दिये।

- इलाहबाद संधि के बाद राबर्ट क्लाइव द्वारा 1765 AD में बंगाल बिहार और उड़ीसा में जो शासन व्यवस्था लागू की गई उसे बंगाल का द्वैध शासन कहा जाता है। जो 1765–72 तक चला। और बाद में 1772 AD में बंगाल प्रेसीडेसी के तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने इस दोहरे शासन को समाप्त करके बंगाल का शासन सीधा कंपनी के हाथ में ले लिया।

- बंगाल में द्वैध शासन के अन्तर्गत बंगाल के दीवानी मामलों का प्रशासन कंपनी ने अपने हाथ में ले लिया और निजामत मामलों का प्रशासन बंगाल के नवाब को सौंप दिया और कंपनी की तरफ से दीवानी मामलों का शासन देखने के लिये राबर्ट क्लाइव द्वारा दो नायब दीवान नियुक्त कर दिये गये (1) सिताबराय (2) मुहम्मद रजा खां

  सिताबराय को बिहार का नायब दीवान और मुहम्मद रजा खाँ को बंगाल और उड़ीसा का नायब दीवान नियुक्त किया।

चूंकि इस समय बंगाल का नवाब निजामुद्दौला वयस्क नहीं था। इसलिये उसकी मदद के लिये कंपनी ने मुहम्मद रजा खाँ को ही बंगाल के नवाब का नायब नाजिम नियुक्त कर दिया।

बंगाल के दोहरा शासन आप क्या समझते है ?

इलाहबाद की संधि के बाद रोबर्ट क्लाइव द्वारा 1765 AD में बंगाल के प्रशासन को दो भागों में बाँट दिया गया था। 1. दीवानी विषय 2. निजामत विषय दीवानी विषयों का प्रशासन कंपनी ने अपने स्वयं के हाथ में ले लिया जबकि निजामत विषयों का प्रशासन क्लाइव द्वारा बंगाल के नवाब को सौंप दिया गया। इस प्रकार बंगाल के प्रशासन को दो भागों में बाँटकर दोनों का प्रशासन अलग–अलग व्यक्तियों को सौंप दिया गया इसे ही बंगाल का द्वैध शासन के नाम से जाना जाता है जो 1765 से 1772 तक प्रचलित रहा।

रेग्यूलेटिंग अधिनियम :–

ब्रिटिश संसद द्वारा Regulating Act 1773 AD में पारित किया गया। इस एक्ट को पारित करने के पीछे ब्रिटिश संसद का मुख्य उद्देश्य :–

1. भारत में कंपनी के लिये प्रशासन का गठन करना था।
2. और दुसरा उद्देश्य कंपनी को व्यापारिक मान्यता के साथ–साथ राजनैतिक मान्यत भी प्रदान करना था।

Regulating Act के मुख्य प्रावधान :–

1. बंगाल के गवर्नर के पद का नाम बदलकर बंगाल का गवर्नर जनरल कर दिया गय तथा मद्रास और बम्बई के गवर्नरों पर उसका नियन्त्रण स्थापित कर दिया।
2. गवर्नर जनरल की मदद के लिये चार सदस्यों की परिषद का गठन किया गय जिसे गवर्नर जनरल की परिषद के नाम से जान जाता है। और रेग्यूलेटिंग एक्ट द्वारा गवर्नर जनरल की परिषद के प्रथम चार सदस्य (1) क्लेबरिंग (2) फिलिप फ्रांन्सीज (3) मानसन (4) बारवैल थे।
3. कलकत्ता में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई और इस का पहला मुख्य न्यायधीश सर एलिजाह एम्पे था। किंतु इस सर्वोच्च न्यायालय का क्षेत्राधिकार बंगाल, बिहर, उड़ीसा में रहने वाले यूरोपीय नागरिकों पर ही लागू किया गया।

4. यह रेग्यूलेटिंग एक्ट 1771 में लागु हुआ और इस समय वारेन हेस्टिग्स बंगाल के गवर्नर के पद पर नियुक्त था इसलिये वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का पहला गवर्नर जनरल/वायसराय कहलाया।

रेग्यूलेटिंग एक्ट का महत्व

रेग्यूलेटिंग एक्ट का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इसी एक्ट के द्वारा पहली बार ब्रिटिश संसद द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन में हस्तक्षेप।

Dr. Kailash Chand Gurjar